"एक प्रश्न ?"

27.

➢ तेरे सभी विभिन्न प्रकारो महानो - जिन की तू अर्चना - पूजा- अराधना - ध्यान वगैरह करता आ रहा है गा - नाच - कूद कर....! क्या इन सभी विभिन्नताओ में से कोई एक भी ऐसा उच्छिष्ट - परमात्मा के पितामहो में से हैं जो स्वंय से प्रतिपादित हैं.....?

➢ तो जान ले केवल नहीं.....! कोई एक भी वैसा नहीं हैं जो स्वंय को परिभाषित भी कर सके यही सच है.....!

➢ परन्तु केवल एक ही ऐसा है जो स्वंय से ही सदाबहार रोशन- निरन्तर प्रत्यक्ष सदाबहार विशेष हैं "परम चेतन सत्ता".....!

➢ हे नानक तेरा गुरू (परमात्मा) कौन हैं....? नानक उवाच - शब्द गुरू (केवल रागमई प्रकाशित आवाज़) अर्थात "परम चेतन सत्ता" सुरत धुन चेला.....!

➢ तेरे सभी महान धार्मिक - संसारिक कर्मकाण्डो से तो केवल यही साबित होता है कि "महामूर्ख" लिखा है प्रभु के मस्तक ललाट विशेष पर ओर यह भी केवल तुझे ही दिखायी दिया है क्योंकि देखने की दुर्लभ दिव्य दृष्टि तो सिर्फ तुझे ही प्राप्त हुई है ना ....!

➢ ईलाज केवल एक ही है प्रत्येक काल विशेष में भी पिछला पूरा ईमानदारी से विद इंटरेस्ट सच्चे मन से भुगतान तथा आगे सदा के लिये "तौबा विशेष" कर अंदरूनी सच्ची आत्मा

विशेष से "तभी तुझे "कुछ" कहने का मात्र अधिकार "उच्छिष्ट" विशेष है .....!"

- चालाक - सियाणतो से ओत-प्रोत विकृत इच्छाओ - वासनाओ में डूबा "प्राणी केवल भूत - काल - प्रेतो" का ही अनुसरण करता हुआ महा काल के जाल विशेष में सदा के लिये गर्क विशेष होता जा रहा है .....!

- निजी जन्म मरण - निजी शादी ब्याह - निजी मत धर्म - निजी पसंद नापसंद को विचार कर लिया गया कोई भी निर्णय केवल "व्यक्तिगत-सीमाबध-स्वतंत्र" विशेष है ।

- केवल जनहित अथवा आत्मिक उन्नति को प्रत्यक्ष ध्यान में रख कर लिया गया प्रत्येक फैसला ही सर्वोत्तम - आध्यात्मिक तौर पर सर्व कल्याणकारी विशेष है ।